22140093

International Baccalaureate®
Baccalauréat International
Bachillerato Internacional

HINDI A: LITERATURE – HIGHER LEVEL – PAPER 1
HINDI A : LITTÉRATURE – NIVEAU SUPÉRIEUR – ÉPREUVE 1
HINDI A: LITERATURA – NIVEL SUPERIOR – PRUEBA 1

Friday 9 May 2014 (morning)
Vendredi 9 mai 2014 (matin)
Viernes 9 de mayo de 2014 (mañana)

2 hours / 2 heures / 2 horas

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this examination paper until instructed to do so.
- Write a literary commentary on one passage only.
- The maximum mark for this examination paper is *[20 marks]*.

INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N'ouvrez pas cette épreuve avant d'y être autorisé(e).
- Rédigez un commentaire littéraire sur un seul des passages.
- Le nombre maximum de points pour cette épreuve d'examen est *[20 points]*.

INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra esta prueba hasta que se lo autoricen.
- Escriba un comentario literario sobre un solo pasaje.
- La puntuación máxima para esta prueba de examen es *[20 puntos]*.

© International Baccalaureate Organization 2014

*नीचे दो उद्धरण दिए गए हैं, (1) तथा (2)। इन दोनों में से किसी **एक** पर साहित्यिक व्याख्या लिखिए।*

1.

वे पुल से जरा नीचे ढलान पर बैठे थे। नीचे पहाड़ी नदी की पतली धारा बह रही थी। वे इकट्ठे नहीं, बीच में फासला छोड़ कर बैठे थे। युवक की आयु होगी चौबीस-पचीस के करीब। सिर पर हिप्पियों जैसे केश। आकर्षक चेहरे पर उदासी के गहरे भाव। युवती कोई अठारह या बीस की होगी। फूल सी मुलायम पर मौत-सी पीली। मई मास की बिना चाँद की रात। साफ आकाश में तारों की भरमार। दूर मंदिर के आँगन में लगे बिजली के बल्ब की धुंधली जादुई रोशनी। नदी तट पर सिवा उन दोनों के अब कोई नहीं रह गया था। पर पुल पर से लारियाँ, ट्रक और पैदल आदमी अभी तक आ-जा रहे थे। युवक सरे शाम ही वहाँ आ बैठा था। युवती काफी रात गए आई थी। आ कर उस शिला के किनारे खड़ी हो गयी थी, जो छज्जे की तरह पानी पर छा रही थी। असंख्य तारों के अक्स पहाड़ी नदी की नीली चंचल धारा नववधू की साड़ी की तरह झिलमिला रही थी।

उनमें बातचीत आरंभ करने की कोशिशें ही नहीं, बल्कि झड़पें भी हो चुकी थी। युवक ने पानी में कंकड़ फेका था। पानी के छीटें चारों ओर उड़े थे, जैसे किसी ने नन्ही-नन्ही मोतियों की लड़ियाँ बिखेर दी। युवती मुसकुराई थी। उदास फीकी मुस्कान। "कितना सुहाना दृश्य है!" उसके मुंह से अचानक निकला था। "होगा," युवक ने कहा। "क्या?" युवती पूछने को हुई और फिर मौन रह गयी। "आप क्या यहाँ रोज आती हैं?" कुछ देर खामोश रहने के बाद, शायद खामोशी से ऊब कर, युवक बोला था। "आप से मतलब?" युवती की आवाज में पहले की अवज्ञा के कारण क्रोध था। तब से वे खामोश बैठे थे। एक दूसरे से चिढ़े-चिढ़े। युवती नदी की नर्म रेत पर बार-बार किसी का नाम लिख और मिटा रही थी। नदी की दूसरी ओर ऊंची पहाड़ी थी, जिस पर थोड़े-थोड़े फासले पर बिजली की असंख्य बत्तियाँ जल रही थीं और लग रहा था, मानो वह पहाड़ी नहीं, तारों भरे आकाश का कोई भाग हो।युवक एकटक उधर देख रहा था। अचानक युवक ने उधर देखना बंद कर दिया, जम्हाई ली, कलाई पर बंधी घड़ी पर नज़र डाली और जैसे अपने आप से बोला: "ग्यारह बज गए।" युवती पूर्ववत रेत पर लकीरें खींचती रही। "मैंने कहा, ग्यारह बज गए," युवक ने सीधे युवती को संबोधित किया। "बला से," युवती ने रूखेपन से जवाब दिया। "मेरा मतलब है, आप को देर नहीं हो रही है?" "आप से मतलब?" "मतलब है। मुझे यहाँ एक काम करना है।" "तो करते क्यों नहीं! मैं कोई रोक रही हूँ?" "मतलब यह है कि मैं मरना चाहता हूँ।" युवती की बड़ी-बड़ी आँखें और भी बड़ी हो गयीं। "लेकिन मुश्किल यह है, कि दुनिया शांति से मरने भी नहीं देती। मैं यहाँ शाम से बैठा हूँ, पर..." युवती पत्थर बन गयी थी। युवक उसके सामने जा खड़ा हुआ और बहुत ही आजिजी से बोला, "तो अब आप कृपा करें प्लीज!" युवती कुछ क्षण तक खामोश बैठी रही ...बुत की तरह। फिर उसका चेहरा विकृत हो उठा, जिसे उसने हाथों से ढाँप लिया और सिसक उठी। "अरे आप तो रोने लगी! मैं कौन हूँ आपका?" और कुछ देर बाद वे दोनों खामोश पास-पास बैठे थे। युवक के चेहरे पर उदासी के बादल और भी घने हो गए थे। "वह आप से प्यार करता था," युवक बोला, "पर जब उसे पता चला, मेरा मतलब है आपकी दशा का, तो भाग खड़ा हुआ! यही न? धोखेबाज!" "नहीं, उन्हें गाली मत दीजिये," युवती ने पथराए स्वर में कहा। "ओह! अभी भी इतना प्यार है! अजीब लड़की हैं आप! और एक शालू थी कि सारा प्यार, सारे वादे भूलकर किसी दूसरे की हो बैठी। केवल इसलिए कि दूसरा एक बहुत बड़े ठेकेदार का बेटा है, जबकि मैं एक मामूली गरीब आदमी हूँ।" "नहीं वास्तव में उन्होने मुझे धोखा नहीं दिया था, हम दोनों के एक जाति के न होने कि वजह से मेरे माता-पिता मान नहीं रहे थे। और तभी जाना पड़ गया उन्हे किसी काम से शिमला। वहाँ से वापस नहीं लौट पाये थे। एक्सिडेंट में..." पूरब में ऊंची पहाड़ी के पीछे चाँद की कटे किनारेवाली पीली चमकदार थाली उभरी और धीरे-धीरे ऊपर उठती चली गयी। चारों और जैसे चाँदी ही चाँदी बिखर गयी। पहाड़ कि चोटियां, वृक्ष, नदी की धारा, मकानों की छतें-सब रूपहली हो उठी।

स्वप्नलोक की सृष्टि! "ठीक है। तब एक बात हो सकती है। कुछ देर सोचने के बाद युवक बोला। आप सारी ज़िम्मेदारी मुझ पर डाल सकती हैं।" "जी नहीं, धन्यवाद, बाद में ताने दे-देकर आप मेरी जिंदगी नर्क बनाते रहेंगे।" "नहीं यह नहीं होगा।" दूर घंटाघर की घड़ी ने दो बजाए। युवक चौंक उठा। युवती बोली, "मुझे मंजूर है, पर शर्त यह है कि आप भी ...।" "नहीं। यह नहीं हो सकता। मैं इस स्वार्थी दुनिया में नहीं रह सकता।" युवती बोली, "विशेष परिस्थितियों के कारण आपको ऐसा लग रहा है। जिस तरह आप चाहते हैं कि मैं जिंदा रहूँ, उसी तरह मेरी भी जबर्दस्त इच्छा है कि आप जिंदा रहें, क्योंकि जीवन से बढ़ कर इस दुनिया में और कोई चीज नहीं है।" धारा बह रही थी। चाँदनी के कारण वह बिलकुल चाँदी सी लग रही थी। उसकी तरंगों में गुनगुनाहट सी बज रही थी और ऐसा लग रहा था जैसे वह गा रही हो। युवक ने पहचानी नजरों से गौर से उसकी ओर देखा। उसे वह शालू-सी प्यारी और मोहक लग रही थी।

दर्शक, "धारा बहती रही" (1977)

2.

आम बेचती स्त्रियाँ

यह गाँव का स्टेशन था
यहाँ केवल पैसेंजर रुकती थी
वहाँ मुझे वे दिखाई दीं
आम बेचनेवाली स्त्रियाँ
छोटी टोकनियों में-छोटी
बारह-बारह पके देशी आम लिए
इस बोगी से उस बोगी तक दौड़ती हुई
पूछती हुई, खिड़की के पास बैठे हर मुसाफिर से
केवल दस रुपये में एक दर्जन देशी मीठे आम
शहर के बाज़ार में जो दुर्लभ
पंचदारा कंची, बारहमसी, हनुमान पसंद
ठेठ जंगलपहाड़ों के वृक्षों में पके-
उन देशी आमों की मीठी गंध से
महक उठा था पूरा प्लेटफॉर्म
कोई भाव करता, कोई देखता सूँघकर
कोई खरीद लेता तो वे हो जाती प्रसन्न
चमक उठतीं उनकी आंखे
ट्रेन यहाँ बस दो मिनट रुकती
इत्मीनान से बैठे मुसाफिर।
मजा लेते उनकी हड़बड़ाहट का
जो चेहरे, आवाज़ और आँखों से झाँकती
और एक बेचारगी भी जिसे वे भरसक
चेहरे पर आने से रोकती
कि बिक ही जाएँ आम
अभी वे लाई थीं जंगलों से तोड़कर
पके, मीठे देशी आम
उन पगडंडियों से चलकर
जिन्हें ढक लिया था ऊंची घास ने
जिन्हें केवल उनके पाँव पहचानते थे
बस दो मिनट में चलने लगती ट्रेन
कुछ शरारती और धूर्त मुसाफिर
पैसे देने का उपक्रम करते
जानबूझकर देर करते
वे गिड़गिड़ाती हुई-सी दौड़तीं
अंत में हारकर कहतींकम-से-बाबू कम-
टोकनी ही फेंक दो, खिड़की से बाहर
ऐसे मे फिंकी हुई टोकनी को

अपने सीने से लगाए वे खड़ी रहतीं हताश
देर तक जाती हुई ट्रेन को देखती
देख सको तो देखो, क्रोध की अग्नि में
जलती हुई उनकी आंखें,
और डूबती हुई करुणा के जल में
खूनपसीने की उनकी कमाई का
मोल दिये बगैर जो चले गएऐसे-
मुसाफिरों को सरापती वे खड़ी रहती हैं
देर तक प्लेटफॉर्म पर
तुम अपनी मस्ती में इतराते चले जाते हो
उन गरीब स्त्रियों के पैसे दिये बगैर
और यह जाने बिना
कि दुआएं चाहे हो जाती हों बेअसर
इस दुनिया में
मगर उस शाप से मुक्त होना आसान नहीं
जो तुम्हें दिया जा चुका है।

एकांत श्रीवास्तव, बहुवचन, जुलाई सितंबर (2010)